साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार, 28-अक्टूबर- 3 नवंबर 2024 वर्ष-10, अंक-28

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठः-8,मूल्यः- 2 रुपए

ग्वालियर में किसानों के आईडी कार्ड बनाए जा रहे, अब किसानों को जारी किए जा रहे फार्मर आईडी

अब फार्मर आईडी पर किसानों को मिलेगी पीएम किसान सम्मान निधि

भोपाल। जागत गांव हमार

देशभर के करोड़ों किसान जो सरकारी योजना का लाभ उठा रहे हैं, उन्हें अब योजनाओं का लाभ नहीं मिलेगा। हाल ही में सरकार ने एक शर्त के साथ इसके लिए आदेश जारी कर दिए हैं। दरअसल, सरकार ने की फार्मर आईडी बना रही है। जिन किसानों के पास यह आईडी होगी, उन्हें ही सरकारी योजनाओं का लाभ दिया जाएगा। अब पीएम किसान योजना में राशि पाने के लिए किसानों को यह आईडी बनाना जरूरी होगा। सरकार ने आधार कार्ड की तरह ही अब फार्मर आईडी बनाने का काम शुरू हो गया है। सभी किसानों को यह आईडी बनाना अनिवार्य है। जो किसान आईडी नहीं बनाएंगे, उन्हें मिल सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त नहीं होगा। देश भर में भी करोड़ों किसानों की यह फार्मर आईडी बनेगी। हालांकि अभी धीमी गति से आईडी बनाने का काम चल रहा है। दरअसल, किसानों को कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सुगम एवं पारदर्शी तरीके से उपलब्ध कराने के लिए ग्वालियर जिले में भी शासन के निर्देशों के तहत किसानों की फार्मर आईडी बनाई जा रही है। फार्मर आईडी नवम्बर तक बनवाई जा सकती हैं। कलेक्टर रुचिका चौहान ने जिले के किसान भाईयों से ऑनलाइन स्वयं अथवा स्थानीय युवा सर्वेयर, नागरिक सुविधा केन्द्र (सीएससी), पटवारी, सहकारी समिति या पीडीएस की दुकान के माध्यम से अपनी फॉर्मर आईडी बनवाने की अपील की है।

दिसंबर से नई व्यवस्था

फार्मर आईडी इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि सरकार द्वारा संचालित प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का लाभ दिसंबर माह के बाद उन्हीं किसानों को मिलेगा जिनकी फॉर्मर आईडी होगी। इसलिए किसान भाई अपनी फार्मर आईडी अवश्य बनवा लें। किसान आधारकार्ड, समग्र आईडी, खसरा/खतौनी की प्रतिलिपि व मोबाइल नंबर इत्यादि के आधार पर अपनी फार्मर आईडी बनवा सकते हैं।

30 नवंबर है आखरी तारीख

जानकारी के मुताबिक किसानों की फार्मर आईडी सितंबर माह से बनना प्रारंभ हो चुकी है। पटवारियों द्वारा आईडी बनाने का काम किया जा रहा है। शासन के निर्देश है कि जल्द से जल्द किसानों की आईडी बनाई जाए। हालांकि आईडी बनाने की जिले में रफ्तार बहुत धीमी गति से चल रही है। देश के सभी किसानों की आईडी बनाने के लिए सरकार ने 30 नवंबर की अंतिम तिथि दी गई है। इस तिथि तक किसानों की आईडी बनाना अनिवार्य होगा।

केंद्रों के संचालन के लिए प्रदेश की 275 समितियों का चयन

मप्र के गांवों में अब जन औषधि केंद्र भी चलाएंगी कृषि सहकारी समितियां

- 55 समितियों को केंद्र संचालन का लाइसेंस जारी किया गया
- मध्य प्रदेश के गांवों में ऐसा प्रयोग पहली बार किया जा रहा
- उप्र में 2023 से सहकारी समितियां कर रहीं दवा कारोबार
- जन औषधि केंद्रों पर सस्ती दरों पर मिलती हैं जेनेरिक दवाइयां।

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश की ग्राम पंचायतों में कृषि साख सहकारी समितियां (बी-पैक्स) अब मेडिकल स्टोर यानी जन औषधि केंद्र भी चलाएंगी। यहां से ग्रामीणों को बाजार के मुकाबले सस्ती दरों पर कारगर जेनेरिक दवाएं उपलब्ध हो पाएंगी। इस प्रयोग से सहकारी समितियों को आय का नया स्रोत भी मिल जाएगा। सहकारिता विभाग के अधिकारियों ने बताया कि ऐसे जन औषधि केंद्रों के संचालन के लिए प्रदेश की 275 समितियों का चयन किया गया। इनमें से 270 ने अपना औपचारिक आवेदन विभाग को कर दिया। इनमें से 55 समितियों को केंद्र संचालन का लाइसेंस जारी किया गया है। 24 समितियों में जन औषधि केंद्र शुरू भी करवा दिए गए हैं।

मध्य प्रदेश में ऐसा प्रयोग पहली बार हो रहा है। उत्तर प्रदेश में कृषि साख सहकारी समितियां वर्ष 2023 में ही दवा कारोबार में उतर चुकी हैं। बता दें, मध्य प्रदेश में जन औषधि केंद्रों में व्यवसाय अच्छा हो रहा है। पिछले पांच वर्ष में यहां 44 करोड़ रुपये की जेनेरिक दवाएं बिकी हैं।

फार्मा कंपनी से होगा अनुबंध

नियमों के मुताबिक किसी दवा दुकान के संचालन के लिए फार्मासिस्ट होना अनिवार्य है। जिला उपायुक्त , सहकारिता छविकांत बाघमारे ने बताया कि कृषि साख सहकारी समितियों के जन औषधि केंद्र का संचालन करवाने के लिए फार्मा कंपनी से अनुबंध किया जाएगा। केंद्र सरकार को इसका प्रस्ताव जाना है। वर्तमान में सीहोर, धार सहित कुछ जिलों में समितियों ने स्थानीय स्तर पर फार्मासिस्ट नियुक्त कर दुकानों का संचालन शुरू किया है।

किसानों को होगा सीधा फायदा

कृषि साख सहकारी समितियों पर जन औषधि केंद्र खुलने का सबसे अधिक लाभ किसानों को मिलेगा। वे अपने घर के नजदीक सस्ती दवाइयां प्राप्त कर सकेंगे। वहीं समितियों के स्वावलंबी होने से भी किसानों को कर्ज और दूसरी सुविधाएं मिलने में आसानी हो जाएगी।

समितियां कर रही ये कारोबार

आर्गेनिक उत्पादों का व्यवसाय करने के 1,454 समितियों ने आवेदन किया है। इन समितियों के यहां आर्गेनिक बीज तैयार करने के लिए जगह भी उपलब्ध है। इस तरह की ज्यादातर समितियां आदिवासी क्षेत्रों में किसानों के साथ मिलकर काम करेंगी। समितियों को निर्यात कारोबार से जोड़ने का भी प्रस्ताव है। इन समितियों की प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार कराई गई है। नेशनल एक्सपोर्ट कोऑपरेटिव सोसायटी की सदस्यता के लिए 1,700 समितियों से आवेदन कराया गया है।

बहुउद्देशीय बनाने की कवायद

सरकार बेहतर कार्य करने वाली सहकारी साख समितियों को बहु उद्देश्यीय और विविध व्यवसाय करने वाली समिति बनाने की कोशिश कर रही है। सहकारिता विभाग ने 4500 समितियों में से 2000 समितियों को इसके लिए चुना है।

प्रदेश की कई कृषि साख सहकारी समितियों को अलग-अलग काम करने के लिए कहा गया है। अभी इन समितियों को जन औषधि केंद्र संचालित करने के लिए लाइसेंस दिए जा रहे हैं।

-मनोज कुमार सरियाम, पंजीयक सहकारी संस्थाएं, मध्य प्रदेश

रबी फसलों के लिए मप्र में खाद की बढ़ी डिमांड

डीएपी-एनपीके खाद की बिक्री में 27% का उछाल

कृषि मंत्री बोले-यूरिया,डीएपी, एनपीके की रैक मिल रही

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश में खाद की बिक्री में जबरदस्त बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है। राज्य के किसानों ने रबी फसलों की बोवनी के लिए डीएपी और एनपीके का इस्तेमाल बीते साल की तुलना में अधिक किया है, जिसकी वजह से इन उर्वरकों की बिक्री में 27 फीसदी से अधिक का उछाल दर्ज किया गया है। राज्य के कृषि मंत्री ऐंदल सिंह कंषाना ने कहा कि किसानों के लिए पर्याप्त मात्रा में उर्वरक उपलब्ध है। वहीं, कांग्रेस ने उपचुनाव वाले राज्यों में किसानों को एडवांस में खाद देने को लेकर भेदभाव के आरोप राज्य की भाजपा सरकार पर लगाए हैं। मध्य प्रदेश सरकार ने रबी सीजन में बोवनी के लिए जरूरत डीएपी और एनपीके खाद की पर्याप्त उपलब्धता बनाए रखने का वादा किसानों से किया है। राज्य के कृषि मंत्री ने कहा कि जिलों की मांग और बिक्री की स्थिति को ध्यान में रखकर रैक की प्लानिंग की जा रही है। प्रदेश में यूरिया और डीएपी, एनपीके की रैक लगातार प्राप्त हो रही है। जिलों की मांग अनुसार उर्वरकों की रैक उपलब्ध कराई जा रही है।

नकली खाद बिक्री पर दर्ज होगा मुकदमा

कृषि विभाग की ओर से कहा गया कि खाद की कालाबाजारी करते पाए जाने पर कड़ा एक्शन लिया जाएगा। कालाबाजारी और नकली उर्वरक बेचने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए दोषियों पर एफआईआर भी दर्ज कराई जाएगी। राज्य सरकार के पास पर्याप्त खाद उपलब्ध है। किसानों को खाद के लिए किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होनी दी जाएगी। राज्य के कृषि मंत्री ने कहा है कि किसानों को खाद के लिए चिंता करने की जरूरत नहीं है।

5.58 लाख टन बिकी खाद

कृषि मंत्री ने बताया कि बीते साल माह अक्टूबर-2023 में डीएपी और एनपीके का बिक्री आंकड़ा 4.37 लाख मीट्रिक टन दर्ज किया गया था। इस साल अक्टूबर-2024 में दोनों खाद की बिक्री का आंकड़ा 27 फीसदी से अधिक बढ़कर 5.58 लाख मीट्रिक टन पहुंच गया है। इसमें से 2.20 लाख मीट्रिक टन डीएपी एवं एनपीके की बिक्री दर्ज की गई है। जबकि, 3.36 लाख मीट्रिक टन स्टॉक में उपलब्ध है। रबी सीजन की बंपर बोवनी को देखते हुए स्टॉक में रखी खाद भी बिकने की संभावना जताई जा रही है।

उज्जैन के किसान फसल की कम पैदावार से दुखी, लागत भी नहीं निकलेगी

परेशान किसान ने आग के हवाले कर दिया 14 बीघा सोयाबीन

उज्जैन। जागत गांव हमार

किसान अपनी फसल को तैयार करने में खाद-बीज से लेकर हकाई-जुताई में हजारों रुपए खर्च करता है, ताकि उसे अच्छा मुनाफा हो सके। मगर कई बार ऐसी स्थिति भी बनती है कि फसल कटाई के बाद किसान को लगाई गई लागत निकलना भी मुश्किल हो जाता है। उज्जैन के बड़नगर में इसी तरह के हालात बने। यहां के किसान हीरालाल पाटीदार ने अपनी सोयाबीन की फसल में आग लगा दी। उन्होंने अपनी 28 मे सोयाबीन की बोवनी की थी और उसकी बोवनी, खाद-बीज, हकाई, जुताई और कटाई में ही उन्होंने लगभग हजारों रुपए खर्च कर दिए। फसल तैयार होने में करीब चार महीने इंतजार भी किया। मगर जब कटाई की बारी आई तो सोयाबीन की पैदावार लागत से भी कम हुई। जबकि उपज निकलवाने में थ्रेशर व मजदूरों का खर्चा अलग से हो गया। इसी बात से दुखी होकर किसान ने अपनी सोयाबीन फसल में आग लगा दी।

28 बीघा में की थी बोवनी

बडनगर तहसील के गांव अजड़ावदा के किसान हीरालाल पाटीदार ने अपने 28 बीघा खेत में आरवीएसएम 1135 वैरायटी की सोयाबीन लगाई थी। 14 बीघा की सोयाबीन फसल को मजदूरों से कटवाकर ढेर लगा दिया था तथा 14 बीघा में फसल खड़ी थी। प्राकृतिक आबदा के कारण किसान की किस्मत ने साथ नहीं दिया और जब थ्रेशर मशीन से सोयाबीन निकालना प्रारंभ की तो उत्पादन देख किसान के होश उड़ गए और उसने अपने हाथों से ही अपनी खून पसीने की मेहनत वाली 14 बीघा की सोयाबीन फसल के ढेर को आग के हवाले कर दिया।

चौंकाने वाला उत्पादन

हीरालाल पाटीदार ने बताया कि सोयाबीन फसल में काफी नुकसान हुआ है। फसल खराब होने से मेरा खर्चा भी नहीं निकल पा रहा है। मात्र 20 से 25 किलो सोयाबीन एक बीघा में से निकली। इसमें सोयाबीन निकालने वाली मशीन का खर्चा भी नहीं निकल पा रहा था। इस कारण 14 बीघा खेत की सोयाबीन फसल को मैंने आग लगा दी। 14 बीघा की सोयाबीन हार्वेस्टर मशीन से कटवाई जिसमें 4-5 थैले भराए हैं।

30 हजार हो गई कटाई

जबकि हार्वेस्टर वाले को ही 30 हजार रु फसल कटाई के देने हैं। ऐसे में लागत अधिक होने के चलते लगभग 2 लाख रुपए का नुकसान हुआ है। बीमा कम्पनी व कृषि अधिकारी आदि के बारे में कहना था कि सभी लोग आकर फसल देख कर गए हैं। आसपास जिन किसान भाईयो ने आरवीएसएम 1135 बोयी है। उन सभी का नुकसान हुआ है।

पाटीदार के खेत की सोयाबीन को पीला फंगस लग गया था। बाद में ज्यादा बारिश के कारण सोयाबीन खराब हो गई थी। मौका मुआयना कर फसल के बारे में वरिष्ठ अधिकारियों को रिपोर्ट दे दी थी। सोयाबीन जलाने की जानकारी भी तहसीलदार को दे दी है।

- सतीश शर्मा, हल्का पटवारी

आपके द्वारा फसल जलाने की जानकारी दी है। दिन में किसान के खेत पर जाकर मौका पंचनामा बनाकर वरिष्ठ अधिकारियों को भेज देंगे।

- पूजा जजमे, कृषि विस्तार अधिकारी अजडावदा

एमएसपी पर खरीद घोषणा से रजिस्ट्रेशन में इजाफा

36 फीसदी बढ़े ज्वार-बाजरा और धान की खेती करने वाले किसान

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश में ज्वार-बाजरा और धान की न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद की घोषणा के चलते इस बार रजिस्ट्रेशन कराने वाले किसानों की संख्या में जबरदस्त इजाफा दर्ज किया गया है। बिक्री के लिए रजिस्ट्रेशन कराने वाले किसानों की संख्या 36 फीसदी बढ़ गई है। माना जा रहा है कि एमएसपी पर खरीद की घोषणा के चलते किसानों इस बार सरकारी केंद्रों पर बिक्री के लिए इच्छुक हैं। इसके अलावा जल्दी भुगतान, खरीद केंद्रों की संख्या में बढ़ोत्तरी समेत अन्य कई कारण हैं, जिससे किसान सरकारी केंद्रों पर फसल बिक्री के लिए आकर्षित हो रहे हैं। मध्य प्रदेश सरकार मोटे अनाज यानी ज्वार और बाजरा के साथ ही धान की खरीद एमएसपी पर कर रही है। इसके अलावा सोयाबीन की खरीद भी एमएसपी कीमत पर करने की घोषणा की गई है।

इन फसलों की बिक्री के लिए राज्य सरकार ने किसानों को रजिस्ट्रेशन कराने की डेडलाइन दी थी। धान, ज्वार और बाजरा की बिक्री के लिए राज्य सरकार ने पहले 19 सितंबर से 4 अक्तूबर तक रजिस्ट्रेशन कराने का समय दिया था, जिसे बाद में बढ़ाकर 14 अक्तूबर किया गया। तय तिथि तक कई जिलों के किसानों के रजिस्ट्रेशन नहीं करा पाने की शिकायतों के बाद सरकार ने रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि बढ़ाकर 21 अक्तूबर की थी। मध्य प्रदेश कृषि विभाग के अनुसार न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी पर धान, ज्वार, बाजरा खरीद के लिए 7.85 लाख से अधिक किसानों ने रजिस्ट्रेशन कराया है। जबकि, बीते साल 7.54 लाख किसानों ने रजिस्ट्रेशन कराया था। इस हिसाब से इस बार फसल बिक्री के लिए रजिस्ट्रेशन कराने वाले किसानों की संख्या करीब 30 हजार अधिक रही है यानी करीब 36 फीसदी उछाल दर्ज की गई है।

किस जिले से कितने किसानों का रजिस्ट्रेशन

मध्य प्रदेश कृषि विभाग के आंकड़ों के अनुसार बालाघाट जिले में एक लाख 29 हजार 373 किसान, रीवा में 64 हजार 215, सतना में 58 हजार 960, जबलपुर में 54 हजार 546, सिवनी में 52 हजार 407, कटनी में 52 हजार 279, मण्डला में 41 हजार 461, पन्ना में 33 हजार 472, शहडोल में 33 हजार 661, मैहर में 26 हजार 757, डिण्डोरी में 24 हजार 91, उमरिया में 23 हजार 662, सीधी में 24 हजार 453, सिंगरौली में 25 हजार 710, अनूपपुर में 21 हजार 851, नर्मदापुरम् में 20 हजार 998, दमोह में 19 हजार 877, मऊगंज में 18 हजार 516, नरसिंहपुर में 11 हजार 828, रायसेन में 9 हजार 364, बैतूल में 8 हजार 148, सीहोर में 6 हजार 196, सागर में 3 हजार 922, ग्वालियर में 3 हजार 630, छिंदवाड़ा में 1 हजार 876, शिवपुरी में 1 हजार 162, दतिया में 1 हजार 26, भिण्ड में 2 हजार 239, विदिशा में 880, मुरैना में 7 हजार 781 किसानों ने रजिस्ट्रेशन कराया है।

मोटे अनाज की खरीद 22 नवंबर से

मध्य प्रदेश के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि मोटे अनाज की खरीद 22 नवंबर और धान का खरदी 2 दिसंबर 2024 से की जाएगी। किसान रजिस्ट्रेशन में फसल का रकबा 14 लाख 12 हजार 857 लाख हेक्टेयर है। फसल खरीद के लिए राज्य सरकार की ओर से जिलावार 1400 से अधिक केंद्र बनाए गए हैं। राज्य सरकार के अनुसार किसानों की उपज खरीद का दाम 48 घंटे के अंदर उनके बैंक खातों में ट्रांसफर किया जाएगा।

पशुपालन राज्य मंत्री ने ने किया शुभारंभ

सांची अब बेचेगा नैचुरल नारियल पानी, तमिलनाडु से आएगा एमपी

भोपाल। जागत गांव हमार

दीपावली के अवसर पर राजधानी भोपाल में सांची ने नारियल पानी लॉन्च किया है। 50 रुपए की 200 एमल का यह नारियल पानी का बोतल में 100प्रतिशत नारियल पानी होने का दावा किया जा रहा है। इसमें किसी प्रकार की कोई मिलावट नहीं रहेगी। ये सीधा तमिलनाडु के पोलाची से पैक होकर भोपाल आएगा, इसके बाद आसपास के जिलों में पहुंचेगा। पशुपालन मंत्री लखन पटेल सोमवार को भोपाल सहकारी दुग्ध संघ के मुख्य डेयरी प्लांट में इसकी बिक्री का शुभारंभ किया है। इस अवसर पर वेटरनरी कौंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ उमेश शर्मा, संचालक पशुपालन एवं डेयरी पीएस पटेल आदि उपस्थित थे।

9 महीने तक कर सकते है स्टोर: सांची दुग्ध संघ भोपाल के सीईओ आरपीएस तिवारी ने बताया कि सांची प्रोडक्ट में नारियल पानी को भी शामिल किया गया है। यह नारियल का पानी 9 महीने तक स्टोर किया जा सकता है।

सांची बना रहा 25 तरह के उत्पाद: आरपीएस तिवारी ने बताया कि पहले 4 से 6 उत्पाद तक सीमित रहने वाला दुग्ध संघ अब 25 तरह के अपने उत्पाद बाजार में उपलब्ध करवा रहा है। इससे सांची पार्लर संचालकों की आय में वृद्धि हुई है और स्थान-स्थान पर स्मार्ट सांची पार्लर लगाए जा रहे हैं। दूध, दही, श्रीखंड, बृज पेड़ा, केशव पेड़ा, सांची नीर और सांची खीर सहित अन्य उत्पाद के बाद अब सांची दुग्ध संघ अपना नया उत्पाद शुद्ध, नैचुरल और पाश्चुरीकृत 'सांची नारियल पानी' बाजार में ला रहा है।

वाजिब दाम में मिलेगा: सीईओ सीईओ आरपी तिवारी ने बताया कि सांची द्वारा नारियल पानी बाजार में लाने का मुख्य उद्देश्य ग्राहकों को वाजिब दामों पर पर्याप्त मात्रा में शुद्ध नारियल पानी उपलब्ध करवाना है। बता दें कि भोपाल में ही हर रोज नारियल के 500 से ज्यादा ठेले लगते हैं। 1 लाख से ज्यादा नारियल पानी रोज लोग पी जाते हैं। नारियल की कीमत 60 से 70 रुपए तक है।

इस वर्ष अभी तक लगभग 700 करोड़ का लाभ

मंत्री पटेल ने कहा कि भोपाल दुग्ध संघ की आय निरंतर बढ़ रही है। इस वर्ष अभी तक लगभग 700 करोड़ का लाभ दुग्ध संघ को हुआ है। दुग्ध संघ निरंतर किसानों के लाभ के लिए कार्य तो कर ही रहा है, संघ के कर्मचारियों के कल्याण में भी पीछे नहीं है। अब किसानों के साथ ही कर्मचारियों का भी बीमा कराया जाएगा। मंत्री ने कहा कि सहकारिता का मूल सिद्धांत है पारदर्शिता और जुड़े हुए हर व्यक्ति तक लाभ पहुंचाना। हमारा उद्देश्य है दुग्ध उत्पादक किसानों को अधिक से अधिक आमदनी हो, इसके लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

प्राकृत ब्रांड से फायदा, किसानों को मिल रहा प्रोत्साहन

महिलाएं रेशम उत्पाद से जुड़कर बनेंगी आत्मनिर्भर

नर्मदापुरम में तैयार होने वाले टसर रेशम, मलबरी रेशम, इरी रेशम और मूँगा रेशम, जिसे गोल्डन सिल्क नाम से भी जाना जाता है, देशभर में प्रसिद्ध हैं

नर्मदापुरम। जागत गांव हमार

रेशम उत्पादन में अपनी खास पहचान बना चुके नर्मदापुरम जिले ने एक बार फिर रेशम के ब्रांड 'प्राकृत' के उत्पादन को गति दी है। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत, जिले में रेशम की खेती करने वाले किसानों को प्रशिक्षण देकर उन्हें फिर से प्रोत्साहित किया जा रहा है। नर्मदापुरम में तैयार होने वाले टसर रेशम, मलबरी रेशम, इरी रेशम और मूँगा रेशम, जिसे गोल्डन सिल्क के नाम से भी जाना जाता है, देशभर में प्रसिद्ध हैं। इस रेशम से 'प्राकृत' ब्रांड के कपड़े तैयार किए जाते हैं, जिनकी मांग न केवल स्थानीय बाजारों में बल्कि विभिन्न राज्यों में भी बढ़ रही है। नर्मदापुरम जिला मध्य प्रदेश का प्रमुख रेशम उत्पादक क्षेत्र है। जिले में रेशम की खेती और उत्पादन का एक लंबा इतिहास है, लेकिन हाल के वर्षों में इस उद्योग को नए आयाम मिले हैं। कलेक्टर सोनिया मीना और जिला रेशम अधिकारी की कोशिशों से इस क्षेत्र में रेशम उत्पादन को एक नई गति मिली है। ककून उत्पादन से लेकर रेशमी धागे और फिर उनसे तैयार होने वाले परिधानों तक का सफर अब जिले में सफलतापूर्वक चल रहा है। जिले में रेशम उत्पादन की यह प्रगति न केवल किसानों के लिए फायदेमंद साबित हो रही है, बल्कि स्थानीय महिलाओं के लिए भी रोजगार के नए अवसर खोल रही है। मालाखेड़ी स्थित धागाकरण इकाई में 45 महिलाएं रेशम का धागा तैयार कर रही हैं। यह धागा बाद में हथकरघा मशीनों पर बुनाई के लिए इस्तेमाल होता है, जिससे सुंदर और आकर्षक रेशमी वस्त्र तैयार किए जाते हैं।

चार प्रकार के रेशम का उत्पादन

नर्मदापुरम में चार प्रकार के रेशम का उत्पादन होता है–टसर रेशम, मलबरी रेशम, इरी रेशम, और मूँगा रेशम (गोल्डन सिल्क)। गोल्डन सिल्क, जो विशेष रूप से अपनी चमक और स्थायित्व के लिए प्रसिद्ध है, का धागा भी तैयार हो चुका है और जल्द ही इससे कपड़े बनाने का काम शुरू हो जाएगा। ये सभी रेशम के प्रकार न केवल गुणवत्ता में बेहतरीन हैं, बल्कि इनकी मांग भी बहुत अधिक है।

लखपति दीदियों का लक्ष्य

रेशम उत्पादन को बढ़ावा देने के साथ, कलेक्टर सोनिया मीना का एक और लक्ष्य है – जिले में 200 'लखपति दीदियों' को तैयार करना। इसका मतलब है कि जिले की महिलाएं रेशम उद्योग से जुड़कर आत्मनिर्भर बन सकेंगी और आर्थिक रूप से सशक्त होंगी। रेशम केंद्रों के फिर से शुरू होने से न केवल उत्पादन में वृद्धि हुई है, बल्कि किसानों और महिलाओं को रोजगार के नए अवसर भी मिले हैं।

ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध

नर्मदापुरम में तैयार रेशमी वस्त्रों की मांग केवल स्थानीय बाजारों तक सीमित नहीं है। अब ये उत्पाद ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स जैसे फ्लिपकार्ट और अमेजन पर भी उपलब्ध हैं, जिससे देशभर के ग्राहक इन रेशमी वस्त्रों को आसानी से खरीद सकते हैं। मालाखेड़ी स्थित रेशम केंद्र में तैयार प्राकृत ब्रांड की साड़ियां और अन्य परिधान शोरूम में भी बिक्री के लिए रखे गए हैं। इनकी बारीक बुनाई और आकर्षक रंगों ने इन्हें बाजार में विशिष्ट पहचान दिलाई है।

रेशम उद्योग में बढ़ती पहचान

नर्मदापुरम का रेशम उत्पादन अब एक बड़े ब्रांड के रूप में उभर रहा है। आत्मनिर्भर भारत के तहत किए जा रहे ये प्रयास न केवल जिले की अर्थव्यवस्था को सशक्त कर रहे हैं, बल्कि यहां के रेशम उद्योग को भी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिला रहे हैं। किसानों और महिलाओं की मेहनत से यहां तैयार होने वाले रेशमी वस्त्रों की गुणवत्ता और सुंदरता का कोई मुकाबला नहीं है।

नीम और सीताफल से होता है तैयार

नीमास्त्र-गौमूत्र बंजर खेतों के लिए वरदान

» डीएपी और यूरिया भी हो जाएगी फेल

भोपाल। जागत गांव हमार

महिलाएं चाहें तो क्या कुछ नहीं कर सकती और किसी भी क्षेत्र में सफलता पा सकती हैं। ऐसा ही कुछ कर दिखाया है एमपी की महिला किसानों ने। ये मध्य प्रदेश की अलग-अलग जगहों से हैं और कुछ ऐसा कर रही हैं जिस पर मोटी तौर पर पुरुषों का आधिपत्य माना जाता है। विदिशा के कुरवाई ब्लॉक से आयी मीरा अहिरवार ने अपनी महिला साथियों के साथ मिलकर नीमास्त्र, जैविक खाद और बीज शक्तिवर्धक जैसे खेती के बहुत से सामान तैयार किए हैं। वे बाजार में इन्हें अच्छे दाम में बेचकर कमाई भी कर रही हैं। मीरा नेबताया कि उन्होंने स्वं-सहायता समूह से जुड़कर इस काम की शुरुआत की थी। समूह से जुड़कर पहले उन्होंने कृषि सखी का प्रशिक्षण लिया, उसके बाद जैविक खाद और जैविक दवाइयां बनाना सीखा। आज वे ब्लॉक की अलग-अलग महिलाओं के साथ मिलकर जैविक खाद और दवाइयां बनाने का काम कर रही हैं। इससे उन्हें न सिर्फ अच्छी आमदनी हो रही है, बल्कि वे किसान भाइयों को भी खेतों में इसके छिड़काव के फायदे बताकर उनकी मदद कर रही हैं।

इससे फसलों को नहीं होता काकई नुकसान

मीरा ने आगे कहा कि लोग नीमास्त्र और अग्नि अस्त्र जैसी जैविक खाद और दवाइयां तैयार करते हैं। इसे खेतों में छिड़काव करने के साथ ही फसलों के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। इससे फसलों को नुकसान भी नहीं होता और जमीन के बंजर होने का खतरा भी टल जाता है। जैविक दवाएं केमिकल दवाओं की तरह नुकसानदायक नहीं होती। नीमास्त्र बनाने के लिए करीब 4 लीटर गौमूत्र, 5 किलो नीम की पत्तियां, सीताफल की पत्ती और लहसुन जैसी सामग्री का इस्तमाल किया जाता है। इन सभी सामग्रियों को गरम पानी में उबाला जाता है। बाद में इसे ठंडा कर बोतल में भर खेतों में छिड़काव के लिए तैयार कर दिया जाता है। इसमें इस्तेमाल होने वाली सभी सामग्री नेचुरल पदार्थों से बनी है। गोबर से निर्मित जैविक खाद को बनाने की प्रक्रिया में लगभग तीन माह का समय लग जाता है। इसमें सबसे पहले गोबर को पूरी तरह से सुखाकर मिट्टी के रूप में लाया जाता है। इस विधि में ढाई से 3 महीने लगते हैं। इसके बाद गोबर को छानकर सुखाया जाता है और आखिर में यह पैक होकर खेतों में डालने के लिए तैयार हो जाता है।

नर्मदापुरम के किसानों ने सिंघाड़े की खेती में स्थापित किया नया आयाम

तालाबों के बजाय अपने खेतों में किसान पैदा कर रहे सिंघाड़ा

नर्मदापुरम। जागत गांव हमार

जिले के किसान अब पारंपरिक तालाबों के बजाय अपने खेतों में सिंघाड़ा उगाने लगे हैं, जो इस क्षेत्र में खेती के नए आयाम खोल रहा है। पहले यह खेती केवल तालाबों तक सीमित थी, लेकिन अब किसान अपने खेतों के किनारों पर अस्थायी तालाब बनाकर सिंघाड़ा उगा रहे हैं। इससे जिले में खेती का रकबा काफी बढ़ गया है, और किसान इस फसल के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा उत्पादन कर रहे हैं। नर्मदापुरम में सिंघाड़ा की खेती ने किसानों को बेहतरीन मुनाफा दिया है। सितंबर में शुरुआती तौर पर एक एकड़ में एक क्विंटल सिंघाड़ा का उत्पादन हुआ, और उत्पादन धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है। रितेश कहार जैसे किसान, जिन्होंने 4 महीने में 40 क्विंटल सिंघाड़ा का उत्पादन किया, बाजार में इसे 6,000 से 6,500 रुपये प्रति क्विंटल के

हिसाब से बेचने में सफल रहे। नर्मदापुरम का सिंघाड़ा न केवल मध्य प्रदेश के शहरों जैसे भोपाल और इंदौर में, बल्कि गुजरात के अहमदाबाद जैसे दूर-दराज के शहरों में भी अपनी जगह बना चुका है। ये फसल अब स्थानीय स्तर पर सीमित नहीं है, बल्कि पूरे देश के कई हिस्सों में किसानों को मुनाफा दे रही है। इससे किसानों की आय में वृद्धि हो रही है और सिंघाड़ा की खेती एक लाभदायक व्यवसाय बनती जा रही है।

नया तरीका अपनाया

किसानों ने अपनी रचनात्मकता का उपयोग करते हुए तालाबों के बजाए खेतों में सिंघाड़ा उगाने का नया तरीका अपनाया है। खेत के किनारों पर अस्थायी तालाब बनाकर वे सिंघाड़े की खेती कर रहे हैं, जिससे सिंघाड़े की खेती का दायरा पहले से ज्यादा बढ़ गया है। इस नए तरीके से सिंघाड़ा उगाने से किसानों को पानी का बेहतर उपयोग करने का अवसर मिल रहा है और इसके साथ ही उत्पादन की दर में भी वृद्धि हो रही है।

बाजार से बीज नहीं खरीदना पड़ता

सिंघाड़ा की खेती का एक और बड़ा फायदा ये है कि इसके लिए किसानों को बाजार से बीज नहीं खरीदना पड़ता। अंतिम फसल के दौरान किसान एक बारा में लगे कुछ सिंघाड़े नहीं तोड़ते, जिससे वह सूखकर पानी में गिर जाते हैं और स्वाभाविक रूप से बीज तैयार होते हैं। ये प्रक्रिया उत्पादन लागत को काफी हद तक कम कर देती है और किसानों को आत्मनिर्भर बनाती है।

इंसानी महत्वकांक्षा की भेंट चढ़ रही पेड़ों की एक तिहाई प्रजातियां

कभी देश में आम, नीम, महुआ, बरगद, जामुन जैसे पेड़ों की बहार हुआ करती थी। सड़कों के किनारे भी यह पेड़ आसानी से देखने को मिल जाते थे। समय बदला तो जैसे पेड़ों पर संकट सा आ गया। आज न ही सड़कों पर बरगद, पाकड़ के दरख्त दिखते हैं, न खेतों में आम, महुआ, जामुन। कहीं न कहीं यह पेड़ गायब से होते जा रहे हैं। इसकी पुष्टि इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफनेचर (आईयूसीएन) द्वारा जारी नई रिपोर्ट भी करती है। आईयूसीएन रेड लिस्ट में अपडेट के लिए वृक्षों के पहले वैश्विक आकलन से पता चला है कि दुनिया में पेड़ों की एक तिहाई से ज्यादा प्रजातियों पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। मतलब की यदि अभी ध्यान न दिया गया तो दुनिया से पेड़ों की 38 फीसदी प्रजातियां विलुप्त हो सकती हैं।

दुनिया में पेड़ों की 47,282 ज्ञात प्रजातियों में से कम से कम 16,425 पर विलुप्त होने का खतरे मंडरा रहा है

गौरतलब है कि यह पहला मौका है जब दुनिया के अधिकांश पेड़ों को आईयूसीएन की रेड लिस्ट में शामिल किया गया है। इस मूल्यांकन से पता चला है कि दुनिया में पेड़ों की 47,282 ज्ञात प्रजातियों में से कम से कम 16,425 पर विलुप्त होने का खतरे मंडरा रहा है।

मतलब की अब रेड लिस्ट में शामिल सभी प्रजातियों में से एक चौथाई से अधिक पेड़ हैं। मतलब की पेड़ों की संकटग्रस्त प्रजातियों की संख्या इस लिस्ट में खतरे में पड़ी पक्षियों, स्तनधारियों, सरीसृपों और उभयचरों की कुल संख्या के दोगुने से भी अधिक है। रिपोर्ट में यह भी सामने आया है कि दुनिया के 192 देशों में पेड़ों की प्रजातियों पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है, जिनमें भारत भी शामिल है।

गौरतलब है कि आईयूसीएन रेड लिस्ट में अब तक 166,061 प्रजातियों को शामिल किया गया है, जिनमें से 46,337 प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा है।

आईयूसीएन के मुताबिक जहां उभयचर जीवों की 41 फीसदी प्रजातियां खतरे में हैं। वहीं स्तनधारी जीवों की 26 फीसदी, शंकुधारी वृक्षों की 34 फीसदी, पक्षियों की 12 फीसदी, शार्क और रे की 37 फीसदी, कोरल रीफ की 44 फीसदी, सरीसृपों की 21 फीसदी और साइकैड पौधों की 71 फीसदी प्रजातियां खत्म होने के कगार पर पहुंच चुकी हैं।

रिपोर्ट में यह भी सामने आया है कि द्वीपों पर सबसे ज्यादा पेड़ खतरे में हैं। इन पर मंडराते खतरों को देखें तो विशेष रूप से शहरी विकास और कृषि के लिए वनों का होता विनाश, साथ ही साथ आक्रामक प्रजातियां, कीट और बीमारियां इनकी लिए बड़ा खतरा हैं।

इसके साथ ही जलवायु में आते बदलवाव भी मंडराते खतरे में इजाफा कर रहे हैं। यह खतरा खासकर उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में कहीं ज्यादा स्पष्ट है, जहां समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है और तेज तूफान आ रहे हैं। ऐसे में इन पेड़ों को बचाने के लिए स्थानीय स्तर पर कार्रवाई करने की जरूरत है। इनके आवासों को बहाल करने के साथ-साथ बीज बैंक, और वनस्पति उद्यान जैसी पहल इसमें मददगार साबित हो सकती हैं।

देखा जाए तो क्यूबा, मेडागास्कर और फिजी जैसे देशों में पहले ही सामुदायिक प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आने लगे हैं।

दक्षिण अमेरिका में जहां दुनिया में पेड़ों की सबसे ज्यादा विविधता मौजूद है। वहां 13,668 में से 3,356 प्रजातियों पर विलुप्त होने का खतरा है। इन पेड़ों को बचाना एक बड़ी चुनौती है क्योंकि कृषि और मवेशियों की चराई के लिए बड़े पैमाने पर वनों का विनाश किया जा रहा है।

कोलंबिया में, रेड लिस्ट से जुड़े आंकड़ों ने राष्ट्रीय संरक्षण योजनाओं को आकार देने में मदद की है। उदाहरण के लिए, पांच नए प्रमुख जैव विविधता क्षेत्रों की पहचान करने के लिए सात लुप्तप्राय मैगनोलिया प्रजातियों का उपयोग किया गया, जिससे स्थानीय और राष्ट्रीय सरकारों को संरक्षण की योजना बनाने में मार्गदर्शन मिला।

आईयूसीएन रिपोर्ट के मुताबिक इन पेड़ों के खत्म होने से हजारों दूसरे पौधों, जीवों और कवकों का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा। यह पेड़ पृथ्वी पर जीवन के लिए बेहद मायने रखते हैं। यह कार्बन, पानी, पोषक तत्व, मिट्टी और जलवायु को नियंत्रित करके पारिस्थितिकी तंत्र को सहारा देते हैं।

हम मनुष्य भी काफी हद तक इन पेड़ों पर ही निभर्ज़र हैं। यह न केवल साफहवा देते हैं। साथ ही पेड़ों की 5,000 से ज्यादा प्रजातियां लकड़ी के रूप में इस्तेमाल की जाती हैं। वहीं 2,000 से ज्यादा प्रजातियां हमें दवा, भोजन और ईंधन प्रदान करती हैं।

गौरतलब है कि भारत में भी पेड़ों के साथ कुछ ऐसा ही देखने को मिल रहा है। देश में न केवल सड़कों, घरों आदि से पेड़ गायब हो रहे हैं, बल्कि खेतों में भी इनकी संख्या में तेजी से कमी आ रही है। जर्नल नेचर सस्टेनेबिलिटी में प्रकाशित एक नए अध्ययन से पता चला है कि पिछले पांच वर्षों में भारत के खेतों से 53 लाख छायादार पेड़ गायब हो चुके हैं। यह अपने आप में एक बड़े खतरे की ओर इशारा है।

मतलब की इस दौरान हर किलोमीटर क्षेत्र से औसतन 2.7 पेड़ नदारद मिले। वहीं कुछ क्षेत्रों में तो हर किलोमीटर क्षेत्र से 50 तक पेड़ गायब हो चुके हैं।

इस अध्ययन के मुताबिक 2010/11 में मैप किए गए करीब 11 फीसदी बड़े छतनार पेड़ 2018 तक गायब हो चुके थे। वहीं ज्यादातर क्षेत्रों में खेतों से गायब हो रहे परिपक्व पेड़ों की संख्या आमतौर पर पांच से दस फीसदी के बीच रही। हालांकि मध्य भारत में, विशेष तौर पर तेलंगाना और महाराष्ट्र में, बड़े पैमाने पर इन विशाल पेड़ों को नुकसान पहुंचा है।

देखा जाए तो इन पेड़ों के गायब होने के लिए कहीं न कहीं बढ़ती इंसानी महत्वाकांक्षा जिम्मेवार है, जो तेजी से इन पेड़ों के विनाश की वजह बन रही है। इसी तरह जलवायु में आता बदलाव भी इन प्रजातियों के गायब होने की वजह बन रहा है, जिसके लिए भी हम इंसान ही जिम्मेवार हैं। ऐसे में इससे पहले बहुत देर हो जाए इस विषय पर गंभीरता से विचार करने और ठोस कदम उठाने की जरूरत है।

पालतू खरगोश की देखभाल और उचित प्रबंधन

» डॉ. शिवम सिंह मेहरोत्रा
» डॉ. जितेन्द्र सिंह यादव
» डॉ.आकाश सुमन
» डॉ. अनिल धाकड़
» डॉ. राहुल यादव
» डॉ. शिवराज चौहान
पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, महू मध्य प्रदेश

खरगोश, अपने प्यारे व्यक्तित्व और नाजुक स्वभाव के लिए जाने जाते हैं। ये न केवल घरेलू पालतू जानवर हैं, बल्कि वे बहुत बुद्धिमान और सामाजिक भी होते हैं। यदि आप एक खरगोश को पालतू बनाने का विचार कर रहे हैं, तो उनकी देखभाल और प्रबंधन के बारे में जानना बेहद आवश्यक है। खरगोशों के लिए सही आवास का होना बेहद महत्वपूर्ण है। उन्हें एक सुरक्षित और आरामदायक जगह की आवश्यकता होती है। एक अच्छे बाड़े का आकार कम से कम 4 फीट × 2 फीट × 2 फीट होना चाहिए, ताकि वे आसानी से घूम सकें। खरगोशों के बाड़े का फर्श नरम और सुखद होना चाहिए। आप सूखे घास, पुआल या विशेष खरगोश बेडिंग का उपयोग कर सकते हैं। एक अध्ययन से पता चला है कि नरम बिस्तर खरगोशों के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करता है, यह उन्हें सुरक्षित महसूस कराता है और तनाव को कम करता है।

आहार: खरगोश का आहार उनकी सेहत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मुख्य रूप से, उन्हें ताजा घास, जैसे टिमोथी घास, पत्तीदार हरी धनिया देना चाहिए।

पोषण संबंधी वैज्ञानिक तथ्य: खरगोशों को फाइबर की अधिक आवश्यकता होती है, जो पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने में मदद करता है। टिमोथी घास में फाइबर की मात्रा उच्च होती है, जो खरगोशों के लिए लाभकारी है। इसके अलावा, सब्जियों का चयन करते समय गाजर, पालक और ब्रोकली का सेवन करें, फलों का सेवन सीमित करें क्योंकि इनमें शर्करा होती है।

पानी: साफ और ताजे पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करें। हाइड्रेशन खरगोशों की सेहत के लिए महत्वपूर्ण है। अध्ययन बताते हैं कि पानी की कमी से उनके किडनी फंक्शन में समस्या हो सकती है।

स्वास्थ्य: खरगोशों की नियमित जांच जरूरी है। उनके दांतों, नाखूनों और त्वचा की स्थिति पर ध्यान दें।

चबाने की आदतें: खरगोशों के दांत लगातार बढ़ते रहते हैं, इसलिए उन्हें चबाने के लिए लकड़ी या विशेष चबाने वाली वस्तुएं दें। दांतों के स्वस्थ विकास को सुनिश्चित करता है, अन्यथा समस्या पैदा कर सकता है।

टीकाकरण: खरगोशों को कई प्रकार की बीमारियों से बचाने के लिए टीकाकरण की आवश्यकता होती है। सुनिश्चित करें कि खरगोश सभी आवश्यक टीके ले चुका है।

सामाजिक व्यवहार: खरगोश सामाजिक होते हैं, इसलिए उन्हें अकेले रखने से बचें। सामाजिकता खरगोशों में चिंता और तनाव को कम करती है।

साथी खरगोश: यदि संभव हो, तो एक साथी खरगोश भी रखें। इससे वे अधिक खुश रहेंगे और तनावमुक्त रहेंगे।

खेल और व्यायाम: खरगोशों को खेलने और व्यायाम करने का समय देना आवश्यक है। वैज्ञानिक अनुसंधान ने दिखाया है कि नियमित शारीरिक गतिविधि से खरगोशों की मांसपेशियों का विकास और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। उन्हें खुला स्थान दें, जहां वे कूद सकें और खेल सकें।

सफाई: खरगोश के बाड़े से गंदगी और अवशेषों को समय-समय पर हटाना चाहिए, ताकि उनके स्वास्थ्य पर कोई नकारात्मक प्रभाव न पड़े। खरगोशों की देखभाल करना एक जिम्मेदारी है, लेकिन सही जानकारी और प्रबंधन के साथ, ये प्यारे जीव आपके जीवन में खुशियों का एक नया गीत बन सकते हैं। ध्यान रखें कि हर खरगोश की अपनी विशेषताएँ होती हैं, इसलिए उनके व्यक्तित्व को समझना और उनके अनुसार देखभाल करना आवश्यक है। सही देखभाल से न केवल उनका स्वास्थ्य बेहतर होगा, बल्कि आप दोनों के बीच एक मजबूत बंधन भी बनेगा।

कुत्तों में बबेसिया संक्रमण और उससे सुरक्षा

» डॉ. सुभ्रदल नाथ
» डॉ. संजू मंडल
» डॉ. गिरिधारी दास
» डॉ. सुमन कुमार
» डॉ. रूपेश वर्मा
पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर, मप्र

किल्ली बुखार, लाल बुखार, प्लीहा बुखार: बबेसिओसिस या बबेसिया संक्रमण मुख्य रूप से टिक जनित बीमारी है पशु चिकित्सक इस गंभीर बीमारी के कुछ लक्षणों के साथ-साथ बबेसिओसिस के लिये उपलब्ध उपचारों और अपने कुत्ते को बबेसिया संक्रमण का शिकार होने से बचा सकते हैं।

बबेसिया क्या है?: बबेसिओसिस मुख्य रूप से टिक जनित बीमारी है जो कई बबेसिया जीवों के कारण होती है जो मनुष्यों और कुत्तों सहित स्तनधारियों में लाल रक्त कोशिकाओं पर आक्रमण करते हैं। जिसमे सामान्यतः बुखार, एनीमिया, हीमोग्लोबिनमिया, हीमोग्लोबिनुरिया जैस लक्षण दिखाई देते है।

रोग कारक: बबेसिया केनिस, बबेसिया गिब्सोनी।

एक कुत्ते को बबेसिओसिस या बबेसिया संक्रमण कैसे हो सकता है: अधिकांश मामलो में बबेसिया जीवाणु संक्रमित टिक के काटने से कुत्तों में फैलता है। संक्रमित गर्भवती मादाऐं अपने अजन्में पिल्लों में बबेसिओसिस संचारित करती हैं। यह रोग प्रभावित कुत्तों से स्वस्थ कुत्तों में टिक्स के माध्यम से फैलता है। कुत्ते इस बीमारी से ठीक होने के बाद भी वाहक के रूप में अन्य स्वस्थ स्वस्थ कुत्तों में बीमारी फैलाते हैं। संक्रमित रक्त, अंग प्रत्योरापन, रक्त आधान।

कुत्तों में बबेसिओसिस के लक्षण क्या है?: बबेसिओसिस में तेज बुखार, भूख न लगना, अवसाद, कमजोरी, हृदय व श्वसन दर में वृद्धि, बबेसिया संक्रमण में पाइप स्टेम मल की ऐठन देखी जाती है। बबेसिया के सबसे आम लक्षणों में शामिल-कमजोरी, पीलिया, बुखार, और गहरे लाल या नारंगी रंग का मूत्र। घातक मामलो में जानवर अपने पैरों पर खड़े होने होने में असमर्थ होते है।

कुत्तों में बबेसिया संक्रमण का निदान कैसे किया जाता है?: पूर्ण शारिरिक जांच के बाद आपका पशु चिकित्सक सूजे हुए लिम्फनोड्स, पीली म्यूकस झिल्ली, बढ़ी हुई तिल्ली जैसे लक्षणों की जाँच करेगा। यदि बबेसियोसिस का संदेह है, तो आपका पशु चिकित्सक एनीमिया कम प्लेटलेट कांउट, कम एल्ब्यूमिन या बिलीरुबिनुरिया की उपस्थिति के लक्षणों की जाँच के लिये रक्त और मूत्र परीक्षण करेगा।

कुत्तों में बबेसिओसिस का उपचार: परजीवी को खत्म करने में मदद के लिये एटीप्रोटोजोअल दवाएँ निर्धारित की जा सकती है। बेरेनिल@4mg/kg b.w1/m, इमिडोकार्ब @3-6 mg/Kg, डाइमिनाजीन @12mg/Kg B.W. Deep 2/m, रक्ताधान का उपयोग एनीमिया के इलाज के लिये किया जा सकता है। रोग की जटिलताओं या दुष्प्रभावों के उपचार के किये सहायक देखभाल प्रदान की जाएगी,श्वसन संबंधी समस्यासों के लिये ऑक्सीजन थेरेपी। उल्टी रोकने में मदद के लिये मतलीरोधी दवा।

बबेसिओसिस से पीड़ित कुत्तों के लिये पूर्वानुमान: जब तक बबेसिओसिस के अधिकांश मामलों का निदान किया जाता है तब तक काफी बढ़ चुका होता है। जब कुछ परिस्थतियों में कुत्ता रोग बाहक होता है और लक्षण प्रदर्शित नहीं करता, लेकिन वह अन्य स्वस्थ कुत्ते में रोग फैलाने में सक्षम होता है।

रोग से बचाव व रोकथाम कैसे कर सकते हैं। इस रोग का उपचार महंगा हो सकता है इसलिये जहां तक संभव हो रोकथाम ही महत्वपूर्ण है। अपने कुत्ते को साल भर टिक रोकथाम दवा देते रहना टिक-जनित बीमारियों की एक श्रंखला को रोकने का एक प्रभावी तरीका हो सकता है।

अपने कुत्ते में प्रति दिन टिक्स की जांच करना, पाए जाने वाले किसी भी परजीवी को सही ढंग से हटाना। क्योंकि जब टिक आपके पालतू जानवर को खाना शुरु करता है जहां तक संभव हो टिक जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिये कार्यक्रम चलाया जाना चाहिये, क्योकि यह टिक जनित रोग झुंड को एकेरिसाइड से डुबोकर या छिड़काव करके टिक मुक्त बनाया जा सकता है।

फूलों की खेती से हर साल 5 लाख तक फायदा

पारंपरिक खेती छोड़ फूलों की खेती कर रहा युवा किसान, हो रहा है अच्छा मुनाफा

अशोकनगर। जागत गांव हमार

अशोकनगर में 35 साल के किसान ने पारंपरिक खेती छोड़ फूलों की खेती शुरू की। अब एक साल में चार बीघा जमीन में पांच लाख रुपए तक सालाना की आमदनी हो रही है। किसान की सफलता को देख गांव के दूसरे किसान भी फूलों की खेती शुरू कर दी है। किसान का कहना है कि दिवाली जैसे त्योहार में डिमांड बढ़ जाती है। अशोकनगर जिला मख्यालय से 6 किलोमीटर दूर स्थित भौरा गांव के रहने वाले लक्ष्मण कुशवाह का यह गांव कुछ साल पहले तक सब्जी की खेती के लिए प्रसिद्ध हुआ करता था, लेकिन अब गांव के किसानों का रुझान फूलों की खेती की ओर बढ़ने लगा है। अब यह गांव फूलों के लिए प्रसिद्ध होने लगा है। दूर-दूर से लोग देखने आते हैं।

परंपरागत फसलों में मिलता है बहुत कम मुनाफा, आसानी से बिकते हैं फूल

लक्ष्मण कुशवाहा का कहना है कि, मैंने 10वीं तक पढ़ाई की है। पढ़ाई में मन नहीं लगा तो पिता के साथ खेती करने लगा। उस समय पिता भी दूसरे किसानों की तरह ही परंपरागत तरीके से गेहूं, सोयाबीन धान और सब्जी की खेती कर रहे थे, लेकिन हम जितनी मेहनत करते थे, उतना मुनाफा नहीं मिल रहा था। फिर ऐसे ही 6-7 साल पहले सब्जी की खेती के किनारे गेंदे पौधे लगा दिए, उनमें बहुत फूल आने लगे। फूलों को सब्जी के साथ बेचने लगे। मंडी में ये फूल आसानी से बिक जाते थे। दाम भी अच्छा मिलता था। उस समय क्षेत्र में फूलों की खेती नहीं होती थी। तब लगा कि फूलों की खेती से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। फिर हमने आधे बीघा में फूलों की खेती की शुरू की।

हर दिन 300 से 400 माला बनाकर बेचते हैं

किसान का कहना है कि, हर दिन 300 से लेकर 400 माला बनाकर बाजार में बेचते हैं। कुछ फूल बेच देते हैं। एक माला की कीमत 10 से लेकर 20 तक रहती है। जबकि फूल 40 प्रति किलो बिक रहे हैं। इस काम को करने में ज्यादा मेहनत भी नहीं लगती है। परिवार के ही लोग फूलों की तुड़ाई कर देते हैं और आवश्यकता अनुसार काम करते हैं। भाई पिता सहित चार लोग काम करते हैं।

फूलों के पौधे घर पर ही तैयार करते हैं

लक्ष्मण कुशवाहा ने बताया, मैं साल भर गेंदा, नारंगी और बिजली के फूलों की खेती करता हूं। इन सभी के कुछ पौधे दूसरे जिले से लेकर आता हूं। जबकि कुछ पौधे घर पर ही तैयार करते हैं। उज्जैन जिले सहित कई ऐसी नर्सरी हैं। जहां पर अच्छी किस्म के पौधे मिलते हैं, जो अलग-अलग रेट पर रहते हैं। उन्हें लाकर लगाते हैं।

एक पौधे से दूसरे पौधे की दूरी 2 फीट

सबसे पहले खेत तैयार करते हैं। इसकी दो बार जुताई करने के बाद गोबर की देसी खाद डालते हैं। इसके बाद कतार में पौधे लगाते हैं। एक पौधे से दूसरे पौधे की दूरी 2 फीट और एक कतार से दूसरी कतार की दूरी भी दो फीट रखी जाती है। इससे पौधे का फैलाव बेहतर तरीके से होता है। साथ ही फूलों को तोड़ने में किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होती है।

बारिश शुरू होते ही लगते हैं गेंदा फूल के पौधे

जून के आखिरी और जुलाई के शुरुआती दिनों में गेंदा फूल के पौधे लगाए जाते हैं, जो अगस्त के आखिरी दिनों में फूल देने लगते हैं। इसके बाद ढाई महीने तक इन पौधों से फूल मिलते रहते हैं। सितंबर, अक्टूबर और नवंबर में भी कुछ दिनों तक फूल लगते रहते हैं। शुरुआती दिनों में ज्यादा फूल टूटते हैं।

पूरे साल भर रहती है फूलों की डिमांड

शहर में फूलों की डिमांड त्योहार, मांगलिक कार्यक्रम सहित 12 महीने बनी रहती है। इस वजह से किसान दो महीने के अंतर से फूलों की खेती करते रहते हैं। अगस्त के महीने में भी नए पौधे लगा दिए हैं, जो अक्टूबर तक फूल देने लगेंगे। शादी का सीजन शुरू होते ही फूलों की डिमांड ज्यादा हो जाती है। इसमें गेंदा फूल के साथ और भी कई प्रकार के फूलों की मांग रहती है। विवाह के समय वरमाला बनाने से लेकर स्टेज सजाने तक के लिए फूलों की जबरदस्त बिक्री होती है।

फफूंदी रोग से बचाना जरूरी

गेंदा फूल के पौधे काफी नाजुक होते हैं। पौधों में केवल फफूंद रोग लगता है। इससे पत्तों पर सफेद रंग की परत जमने लगती है। इसके अलावा तने के अंदर काले रंग का रोग शुरू होता है। हालांकि, यह रोग कभी-कभी आता है। रोग लगने के बाद से फसल पूरी तरह से चौपट होने लगती है। सफेद रंग की फफूंदी भी कई बार हो जाती है, लेकिन वह आसानी से सही भी हो जाती है।

चार ज्यादा उपज देने वाली किस्मों की खेती

वैसे तो गेंदा फूल की दर्जनों किस्में होती हैं, लेकिन लक्ष्मण अपने खेतों में मात्र चार किस्मों की खेती करते आ रहे हैं। उनका मानना है कि इन्हीं किस्मों से अच्छी उपज मिल जाती है। साथ ही बाजार में खपत भी बिना मशक्कत के हो जाती है। यही वजह है कि गेंदा की अन्य किस्मों से दूरी बना रखी है। गेंदा की पहली पूसा संतरा और दूसरी है पूसा वासंती। जबकि नारंगी और बिजली की खेती भी करते हैं।

टीकमगढ़ कृषि महाविद्यालय के प्राध्यापकों/वैज्ञानिकों का कृषि विज्ञान केंद्र के भ्रमण

मृदा परीक्षण प्रयोगशाला नौगांव में छात्रों का व्यावहारिक अनुभव कराया

छतरपुर। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), नौगांव के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. वीणा पाणी श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में टीकमगढ़ कृषि महाविद्यालय के बी.एस.सी. (कृषि) फाइनल वर्ष के छात्रों द्वारा जुलाई माह से लगातार प्रशिक्षण और किसानों के साथ व्यवहारिक अनुभव प्राप्त किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत, ग्राम मानपुरा और सिगरवांनकला से 15-15 किसानों का चयन किया गया है, जहां छात्र किसानों को अपनी सैद्धांतिक जानकारी दे रहे हैं और साथ ही किसानों के कृषि अनुभवों से प्रायोगिक ज्ञान भी प्राप्त कर रहे हैं।

आज इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम के निरीक्षण हेतु टीकमगढ़ कृषि महाविद्यालय के डॉ. एस.पी. सिंह (सहायक प्राध्यापक, कृषि प्रसार एवं रावे प्रभारी), डॉ. संदीप खरे (वैज्ञानिक, पशुधन उत्पादन) और डॉ. पी.के. त्यागी (सहायक प्राध्यापक, सस्य विज्ञान) ने केवीके नौगांव का भ्रमण किया। सर्वप्रथम, कृषि विज्ञान केंद्र की प्रमुख डॉ. वीणा पाणी श्रीवास्तव और डॉ. राजीव सिंह द्वारा टीम का गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

इसके बाद, कृषि महाविद्यालय के छात्रों से उनके द्वारा किए गए कार्यों की विस्तृत जानकारी ली गई। छात्रों ने बताया कि किस प्रकार वे किसानों के साथ मिलकर उन्नत कृषि तकनीकों की जानकारी दे रहे हैं और अपनी शैक्षिक समझ को प्रायोगिक अनुभवों से समृद्ध कर रहे हैं। इसके बाद, टीम ग्राम सिगरवनकला पहुंची, जहां उन्होंने किसानों की खेती से जुड़ी विभिन्न चुनौतियों और उनके समाधान पर चर्चा की। डॉ. एस.पी. सिंह ने किसानों से कृषि छात्रों के सहयोग और उनके अनुभवों के बारे में जानकारी ली। डॉ. संदीप कुमार खरे ने किसानों को अतिरिक्त आय के लिए पशुधन की उन्नत प्रजातियों के बारे में जानकारी दी और साइलेज एवं हे के महत्व पर प्रकाश डाला, जिससे पशुपालन में लाभ बढ़ाया जा सके।

किसानों को मृदा परीक्षण के महत्व पर दी गई जानकारी

इसके अतिरिक्त, डॉ. पी.के. त्यागी ने किसानों को मृदा परीक्षण के महत्व पर जानकारी दी और बताया कि किस प्रकार मृदा परीक्षण से फसल उत्पादन में सुधार किया जा सकता है। इस दौरान, कृषि विज्ञान केंद्र के कृषि मौसम वैज्ञानिक श्री हेमंत सिन्हा और वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता श्री रोहित मिश्रा भी उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में 40 कृषि छात्रों ने जिन्होंने प्रशिक्षण से महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त कीं। किसानों ने भी छात्रों के सहयोग की सराहना की और कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम उन्हें उन्नत खेती की तकनीकों से अवगत कराते हैं, जिससे उनकी आय में वृद्धि हो रही है कार्य्र म के अंत में मृदा परीक्षण प्रयोगशाला नौगांव एवं कृषि विज्ञान केंद्र पर प्रदर्शित इकाइयां जैसे नर्सरी इकाई, उद्यानिकी फसल संग्रहालय इकाई, फलोद्यान उत्पादन इकाई एवं औषधीय इकाई इत्यादि इकाइयों का भी प्राध्यापकों एवं वैज्ञानिकों के द्वारा भ्रमण भी किया गया।

विश्व खाद्य दिवस का आयोजन

विभिन्न खाद्य उत्पाद से अधिक आय के बारे में महिला कृषकों को दी गई जानकारी

सागर। जागत गांव हमार

विश्व खाद्य दिवस पर कृषि विज्ञान केंद्र सागर में आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य भूख को खत्म करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभियानों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और यह सुनिश्चित करना है कि हर व्यक्ति को पौष्टिक भोजन मिले। विश्व खाद्य दिवस का उद्देश्य भूख को मिटाना, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना, कृषि उत्पादकता को बढ़ावा देना और एक स्थायी खाद्य प्रणाली का समर्थन करना है। इस वर्ष, 2024, विश्व खाद्य दिवस की थीम है - बेहतर जीवन और बेहतर भविष्य के लिए भोजन का अधिकार। कार्यक्रम के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र सागर के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवम प्रमुख डॉ के एस यादव द्वारा कृषक महिलाओं को विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर महिलाओं में पोषण आहार, प्रति दिन सब्जियों के खान पान ,मुनगा के पोषक प्रभाव तथा उससे होने वाले फायदा एवं महिलाओं द्वारा विभिन्न कार्यक्रम जो कृषि विज्ञान केंद्र से चलाए गए हैं इस पर जानकारी साझा की डॉ बैशाली शर्मा द्वारा कृषको मृदा परीक्षण और बीयोफर्टीलाइजर के बारे में बताया। श्री मयंक मेहरा द्वारा फल परिरक्षण, मूल्य संबर्धन, पोषण गृह वाटिका, विभिन्न खाद्य उत्पाद से अधिक आय के बारे में कृषक महिलाओं को अवगत कराया। इस कार्यक्रम में गंजबासौदा कृषि कॉलेज के रावे की छात्रायें ,मानव विकास सेवा संघ की ओर से दिनेश नामदेव व उनके सहयोगी इस प्रकार कार्यक्रम में कुल 85 कृषक तथा कृषक महिलाएं उपस्थित रहे साथ ही कार्यक्रम के अंत में कृषक महिलाओं एवं कृषकों को कृषि विज्ञान केंद्र की विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों जैसे पोषण गृह वाटिका, मुर्गीपालन, एजोला , स्पैनलेस कैक्टस ,नर्सरी यूनिट, आम ,अमरूद का ऑर्चिड क्रॉप कैफेटेरिया, आदि का भ्रमण श्री मयंक मेहरा द्वारा कराया गया इस कार्यक्रम में स्वच्छ भारत अभियान के तहत शपथ ग्रहन का कार्यक्रम भी संपादित हुआ।

एक दिवसीय रोजगारमूलक प्रशिक्षण में आधा सैकड़ा महिलाओं ने सीखा उन्नत ोती के गुर

ग्रामीण महिलाओं को दिया रोजगारपरक कुटीर उद्यमों पर प्रशिक्षण

शिवपुरी। जागत गांव हमार

शक्तिशाली महिला संगठन समिति एवं ब्रिटेनिया न्यूट्रिशियन फाउण्डेशन तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवपुरी के समन्वय में ग्राम गिरमौरा, टोंगरा एवं शहर के नजदीक के ग्रामों से आईं लगभग आधा सैकड़ा ग्रामीण महिलाओं की सहभागिता में एक दिवसीय रोजगारमूलक प्रशिक्षण जिसमें जड़ी-बूटियों का एकीकरण एवं प्रसंस्करण, मधुमक्खीपालन, बैकयार्ड पोलट्री-कड़कनाथ पालन से ग्रामीण कुटीर उद्यम सृजन के साथ रोजगार और स्वास्थ्य में समृद्धि की थीम को ध्यान में रखते हुए व्यावहारिक प्रशिक्षण पॉवर पाइंट प्रेजेन्टेशन के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवपुरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. पुनीत कुमार के निर्देशन में दिया गया।

मशरूम उत्पादन की संभावनाएं एवं तकनीक के बारे में केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. जे. सी. गुप्ता द्वारा ऑडियो विजुअल के

माध्यम से व्याख्यान दिया। वैज्ञानिक डॉ. ए. एल. बसेड़िया कृषि अभियांत्रिकी ने जड़ी-बूटियों के प्रसंस्करण एवं समूह के माध्यम से रोजगार की संभावना के बारे में विस्तार से जानकारी दी। शिवपुरी जिले में जड़ी-बूटियों की उपलब्धता एवं उत्पादन की संभावनाओं एकत्रीकरण से व्यापार के बारे में केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एम. के. भार्गव द्वारा बतलाया गया। खेती के साथ-साथ एवं भूमिहीन किसान महिलाओं को घर के पिछवाड़े/बैकयार्ड पोलट्री विशेषकर कड़कनाथ के पालन से संबंधित जानकारी जिसमें चूजों की उपलब्धता, रख-रखाव, चूजों का स्वास्थ्य एवं मुर्गी पालन से रोजगार के बारे में कौशल से दक्ष बनाते हुए पॉवर पाइंट प्रेजेन्टेशन के माध्यम से व्याख्यान दिया। इस अवसर पर केन्द्र के अन्य वैज्ञानिक डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह, डॉ. लक्ष्मी द्वारा भी प्रशिक्षण में जानकारी दी गई। कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रकाशित तकनीकी साहित्य वितरण एवं पंजीयन श्रीमती आरती बंसल स्टेनो द्वारा किया गया।

शक्तिशाली महिला संगठन की निदेशक रवि गोयल एवं कार्यक्रम अधिकारी श्रद्धा जादौन के साथ उनकी पूरी टीम ने ग्रामीण महिलाओं से कुटीर उद्यमों के साथ कृषि विज्ञान केन्द्र से व्यावहारिक जानकारी एवं तकनीकियों को सीखकर अपने परिवार के पोषण के साथ-साथ छोटे कुटीर उद्यम के रूप में समूह के माध्यम से कार्य करने के लिए प्रेरित किया एवं समय-समय पर और अधिक जानकारी के लिए विशेषज्ञों से परामर्श लेने के सुझाव भी दिए।

प्रशिक्षण में आये ग्रामीण महिला प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण की उपयोगिता एवं महत्ता के बारे में बतलाते हुए इस तरह के प्रशिक्षणों को अपने रोजगार एवं स्वास्थ्य के लिए उपयोगी बतलाया तथा कृषि विज्ञान केन्द्र की प्रदर्शन इकाइयों का अवलोकन भी किया गया।

इन फसलों की खेती के लिये अच्छा है समय

अक्टूबर के महीने में करें खाद्यान्न से लेकर औषधीय फसलों की बुवाई, पा सकते हैं अच्छा मुनाफा

भोपाल। जागत गांव हमार

भारत में खेती और किसानों के लिहाज से अक्टूबर का महीना बेहद खास होता है। अक्टूबर माह में खाद्यान्न फसलें से लेकर फल, सब्जी और कुछ औषधीय फसलों की बुवाई की जाती है। इन फसलों में अरहर, मूंगफली, शीतकालीन मक्का, शरदकालीन गन्ना, तोरिया, राई सरसों, चना, मटर, बरसीम, गेहूं, जौ आदि शामिल है, जिनकी खेती करके किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

गेहूं की खेती- गेहूं न सिर्फ भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसल है, बल्कि रबी सीजन की भी नकदी फसल है। धान की कटाई के बाद ज्यादातर किसान गेहूं की फसल लगाते हैं। इसकी बुवाई 20 अक्टूबर से शुरू की जाती है। बेहतर पैदावार के लिये खेत को जैविक विधि से तैयार करके मिट्टी में खरपतवारनाशी दवा डालने की सलाह दी जाती है। भारत में गेहूं की कई देसी और हाइब्रिड किस्में मौजूद है।

शरबती गेहूं की किस्में- राज्य में लगभग 9.00 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में शरबती गेहूं उगाया जा रहा है। शरबती गेहूं की प्रमुख किस्में सी-306, सुजाता (एचआई-617) जेडब्लूएस 17, अमर (एचडब्लू 2004), अमृता (एचआई 1500), हर्षिता (एचआई 1531), एचडी 2987, जेडब्लू-3173 आदि लोकप्रिय हैं।

ड्युरम गेहूं की किस्में- राज्य में लगभग 16.00 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में ड्युरम गेहूं उगाया जा रहा है। ड्युरम गेहूं पूसा अनमोल (एचआई-8737), पूसा मालवी (एचडी-4728), पूसा तेजस (एचआई 8759), मालवश्री (एचआई-8381), मालव शक्ति (एचआई-8498), मालव रत्न (एचडी-4672), एमपी04-1215, पूसा मंगल (एचआई-8713), पूसा पोषण (एचआई 8663), जेडब्लू-1255, जेडब्लू- 1106 आदि प्रमुख किस्में लोकप्रिय हैं।

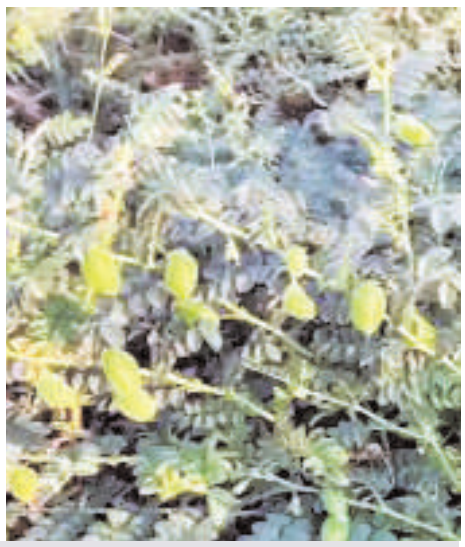

मक्का की खेती

मक्का भी एक प्रमुख नकदी फसल है। आधुनिक खान-पान के चलते बाजार में इसकी डिमांड बढ़ती जा रही है। किसान चाहें तो मक्का की साधारण प्रजातियों की जगह स्वीट कॉर्न और बेबीकॉर्न की खेती कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। अक्टूबर के तीसरे सप्ताह से लेकर नवंबर का पहला सप्ताह तक मक्का की बुवाई करने के बाद अप्रैल-नई तक फसल पककर तैयार हो जाती है। बता दें कि इस फसल में बीमारियां लगाने की संभावना कम ही रहती है, जिससे किसानों को कम लागत में अच्छी आमदनी मिल जाती है।

मक्का की उन्नत किस्में

एचएम - 11 (एचएम- 11), पूसा एच क्यू पी एम 5 इम्प्रूव्ड, पूसा विवेक हाइब्रिड 27 इम्प्रूव्ड, जवाहर मक्का-8 (जे एम-8), जवाहर मक्का-12 (जे.एम.-12), जवाहर मक्का-218 (जे.एम-218)

सामान्य गेहूं की किस्में

राज्य में सामान्य गेहूं लगभग 75.00 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जा रहा है। लोक-1, जीडब्ल्य- 322, जीडब्ल्यू-273, जीडब्ल्यू-366, जीडब्ल्य-173, एमपी-1203, आरवीडब्ल्य-4106, जीडब्ल्य-451, जीडब्ल्यू 3288, जेडब्ल्यू-3211, जीडब्ल्यू-3382, जेडब्ल्यू-1358 आदि, प्रमुख किस्में लोकप्रिय हैं।

चना की खेती

देश-दुनिया में पोषक अनाजों की बढ़ती डिमांड के बीच चना की खेती फायदे का सौदा साबित हो सकता है। इसकी बुवाई के लिये अक्टूबर का दूसरा सप्ताह सबसे सही रहता है। इस बीच चना की उन्नत किस्मों का बीज उपचार करके ही बुवाई का काम करना चाहिये। फसल में कीट-रोग और खरपतवार को बढ़ने से रोकने के लिये खेत की तैयारी के समय ही गहरी जुताई लगाई जाती है।

चना की उन्नत किस्में

92-93, विजय, जेजी 315, जेजी 16, जेजी 130, पूसा 391, दिग्विजय किस्में प्रमुख हैं। वहीं काबुली चने की प्रमुख उन्नत किस्मों में जेजीके 6, आर. एल बीजीके 963, पूसा 2085, पूसा 5023, पूसा चमत्कार, पूसा 1105, पूसा 1188, पूसा 1108, पूसा 3022, बीजीडी 128, पूसा काबुली 1003, जेजीके 1, जेजीके 5, आई.सी.सी. आदि।

राई-सरसों

प्रमुख तिलहनी फसल सरसों और राई की खेती के लिये भी अक्टूबर का महीना सबसे उपयुक्त रहता है। इन फसलों की खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन करके किसान डबल आमदनी ले सकते हैं। अच्छी सिंचाई से सरसों की फसल में अधिक तेल बनता है। सरसों की खेती से पहले मिट्टी की जांच के आधार पर ही खाद-उर्वरकों का इस्तेमाल करना चाहिये। वहीं छिड़काव विधि के बजाय कतारों में सरसों की बिजाई करनी चाहिये।

फूलगोभी की खेती

फूलगोभी की खेती सितंबर और अक्टूबर महीने में की जाती है। इसे सभी प्रकार की भूमि में किया जा सकता है, परन्तु अच्छी जल निकास वाली दोमट या बलुई दोमट भूमि जिसमें जीवांश की प्रचुर मात्रा उपलब्ध हो, काफी उपयुक्त है। इसकी खेती के लिए अच्छी तरह से खेत को तैयार करना चाहिए। इसके लिए खेत को 3-4 जुताई करके पाटा मारकर समतल कर लेना चाहिए।

फूलगोभी की उन्नत किस्में

अगेती किस्में: अर्ली कुंआरी, पूसा कतिकी, पूसा दीपाली, समर किंग, पावस, इम्प्रूव्ड जापानी।

मध्यम किस्में: पंत सुभ्रा,पूसा सुभ्रा, पूसा सिन्थेटिक, पूसा स्नोबाल, के. -1, पूसा अगहनी, सैगनी।

पिछेती किस्में: पूसा स्नोबाल-1, पूसा स्नोबाल-2, स्नोबाल-16। पूसा शरद फूलगोभी, पूसा शक्ति गोभी,काशी अघेनी गोभी, पंत शुभ्रा फूलगोभी आदि।

मटर की खेती

मटर बुवाई किसान भाई पूरे अक्टूबर और कुछ हिस्सों में नवंबर के महीने में भी कर सकते हैं। लेकिन इस बात का ध्यान रखें कि खेत में नमी हो और बारिश की संभावना न हो। बुवाई करने के बाद अगर बारिश होती है तो मिट्टी सख्त हो जाती है और पौध निकलने में दिक्कत होती है। वहीं अगर खेत में पानी जमा हो गया तो बीज सड़ भी सकते हैं।

मटर की उन्नत किस्में

आर्केल किस्म, काशी नंदिनी किस्म, पूसा श्री किस्म, पंत मटर 155 किस्म, अर्ली बैजर किस्म, काशी उदय, काशी अगेती, काशी मुक्ति, अर्किल, जवाहर मटर-3, जवाहर मटर 4, आसोजी आदि।

राई सरसों की उन्नत किस्में

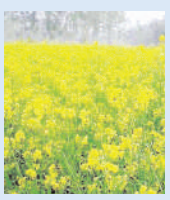

वरुण किस्म, राजेंद्र सुफ्लाम किस्म, पूसा बोल्ड किस्म, क्रांति किस्म, राजेंद्र राई पछेती किस्म, पूसा सरसों आर एच 30, राज विजय सरसों-2, पूसा सरसों 27, पूसा बोल्ड, पूसा डबल जीरो सरसों 31 आदि।

प्याज की खेती

प्याज की खेती के लिए अच्छी तरह से जल निकासी सुविधाएं और लाल दोमट व काली मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। अधिक अम्लीय और क्षारीय मिट्टी में प्याज की खेती करने से बचना चाहिए। प्याज लगाने से पूर्व मिट्टी की जांच करा लेनी चाहिए। 6.5 से 7.5 पीएच मान वाली मिट्टी ही उपयुक्त है।

प्याज की उन्नत किस्में | भीमा लाइट रेड, भीमा डार्क रेड, भीमा राज, भीमा रेड, भीमा सुपर, भिमा किरन

ब्रोकली की खेती

ब्रोकली की खेती का सही समय होता है ठंड का। भारत में सितंबर के अंतिम हफ्ते से लेकर मार्च की शुरुआत तक ब्रोकली की खेती की जाती है। अक्टूबर-नवंबर में ब्रोकली की नर्सरी तैयार की जाती है और फिर उसकी खेती में रोपाई की जाती है। इसकी नर्सरी ठीक उसी तरह तैयार की जाती है, जैसे फूल गोभी, पत्ता गोभी आदि की होती है।

जेएनके विवि में एंटोमोलॉजी सिंपोजियम का आयोजन

मप्र-छग के कीटशास्त्र वैज्ञानिकों ने किया एक मंच पर मंथन

जबलपुर। जागत गांव हमार

जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि में कीटशास्त्र एवं जनेकृविवि कीटशास्त्र एल्युमिनी एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में कीटशास्त्र संगोष्ठी एवं कीटशास्त्र पुर्नमिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कीटशास्त्र विभाग से सेवानिवृत्त पूर्व विभागाध्यक्षों एवं पूर्व प्राध्यापको का कुलपति डॉ. पीके मिश्रा द्वारा स्मृति चिन्ह, शाल व श्रीफल से अलंकरण किया गया। साथ ही विभाग के दिवंगत एवं विदेशों में निवासरत पूर्व प्राध्यापकों के सम्मानार्थ विभाग के विद्यार्थियों द्वारा तैयार लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख आयोजक डॉ. एसबी दास, विभागाध्यक्ष कीटशास्त्र ने आयोजन के रूपरेखा के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम में कीटशास्त्री क्रमश: डॉ. आरके अग्रवाल पूर्व विभागाध्यक्ष, डॉ. कोपी कटियार, पूर्व प्राध्यापक, डॉ. एके खत्री, पूर्व विभागाध्यक्ष व पूर्व प्रमंडल सदस्य, डॉ. केके नेमा, पूर्व प्राध्यापक, डॉ. बीएस चौधरी पूर्व प्राध्यापक, डॉ. एसएस जखमोला, पूर्व अधिष्ठाता, डॉ. राजेश पचौरी पूर्व

प्राध्यापक, डॉ. राजेश वर्मा, पूर्व अधिष्ठाता, डॉ. एके भौमिक, डॉ. शाह पूर्व अधिष्ठाता कृषि संकाय आई.जी.के.वि.वि. का कुलपति द्वारा अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर मप्र एवं छग से आए कीटशास्त्र विभाग के सभी पूर्व प्राध्यापकों ने अपने विचार रखे। उद्घाटन सत्र में नव गठित होने जा रहे जेएनके विवि एल्युमिनी एसोसिएशन के प्रस्तावित मोनो का विमोचन कुलपति डॉ. पीके मिश्रा द्वारा किया गया। कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में सह प्राध्यापक कीटशास्त्र ने एम.एस.सी., पी.एच.डी. विद्यार्थियों के लिए एग्रो बेस्ड राष्ट्रीय एवं बहु राष्ट्रीय निजी कम्पनियों स्टार्टप तथा अन्य क्षेत्रों में कैरियर निर्माण की असीम संभावनाओं को उल्लेखित किया। इस सत्र में डॉ. ए.के. अवस्थी विभाग प्रमुख कृषि कॉलेज बिलासपुर ने कृषि कीट विज्ञान पाठ्यक्रम एवं शोध कार्यो के लिए विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

कार्यक्रम में राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. स्मिता सहस्त्रबुद्धे, कृषि विश्वविद्यालय के प्रमंडल सदस्य एल.एन. सुमन, पल्लवी व्यास, भवानी शंकर शर्मा, सरवनलाल धाकड़, डॉ. मधुसुदन शर्मा, शैक्षणिक परिषद में डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, डॉ. पी.एम. गोर एवं अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. मृदुला बिल्लौरे, कुलसचिव अनिल सक्सैना, निदेशक विस्तार सेवाये एवं शिक्षण डॉ वाय.पी.सिंह, निदेशक अनुसंधान सेवायें डॉ. संजय शर्मा, कृषि एवं उद्यानिकी महाविद्यालयों के अधिष्ठातागण तथा सेवानिवृत्त प्राध्यापक/वैज्ञानिक, विश्वविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र/छात्राऐं उपस्थित रहे।

जागत गांव हमार, सलाहकार मंडल

1. **प्रो. डा. केआर मौर्य, पूर्व कुलपति,** राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसासमस्तीपुर (बिहार) एवं महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)
ईमेल-kuber.ram@gmail.com
मोबा- 7985680406

2. **प्रो. डा. गैब्रियल लाल, प्रोफेसर,** आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग सैम हिंगिन बॉटम यूनिवर्सिटी आफएग्रीकल्चर, टेक्नालोजी एंड साइंसेज, प्रयागराज, उप्र। ईमेल- gaibriyal.lal @shiats.edu.in
मोबा- 7052657380

3. **डा. वीरेन्द्र कुमार, प्रोफेसर एंड हेड,** पौध रोग विज्ञान विभाग, डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर ढोली, मुजफ्फरपुर बिहार। ईमेल- birendraray@gmail.com
मोबा- 8210231304

4. **डा. नरेश चन्द्र गुप्ता, वैज्ञानिक,** मृदा विज्ञान, कृषि महाविद्यालय बिरसा, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कॉके, रॉची झारखण्ड। ईमेल- ncguptabau@gmail.com
मोबा- 8789708210

5. **डा. देवेंद्र पाटिल, वैज्ञानिक** (शस्य विज्ञान) कृषि विज्ञान केन्द्र, सीहोर (मध्यप्रदेश) सेवनिया, इछावर, सिहोर (मप्र)
ईमेल- dpatil889@gmail.com
मोबा- 8827176184

6. **डा. एसके सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर,** एग्री विजनेस मैनेजमेंटकृषि अर्थशास्त्र विभाग, एकेएस विश्वविद्यालय, सतना, मप्र
ईमेल- kumar.ashu777@gmail.com
मोबा- 8840014901

7. **डा. बिनीता सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर** आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग एकेएस विश्वविद्यालय, सतना, मप्र
ईमेल- singhvineeta123@gmail.com
मोबा- 8840028144

8. **डा. आरके शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर,** परिजीवी विज्ञान विभाग, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना, बिहार।
ईमेल- drrksharmabvc@gmail.com
मोबा- 9430202793

9. **डा. दीपक कुमार, सहायक प्राध्यापक,** मृदा एवं जल संरक्षण अभियंत्रिकी विभाग, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पन्तनगर, उत्तराखण्ड।
ईमेल- deepak.swce.cot.gbpuat@gmail.com
मोबा- 7817889836

10. **डा. भारती उपाध्याय, विषय वस्तु विशेषज्ञ** (शस्य विज्ञान) कृषि विज्ञान केन्द्र, विरौली, समस्तीपुर, बिहार।
ईमेल-bharati.upadhya@rpcau.ac.in
मोबा- 8473947670

11. **डा. रोमा वर्मा,** सब्जी विज्ञान विभाग महात्मा गांधी उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, पाटन, जिला- दुर्ग, छत्तीसगढ़। ईमेल- romaverma35371@gmail. com
मोबा- 6267535371

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय ने आयोजित किया प्रशिक्षण प्रोग्राम

उन्नत खरपतवार प्रबंधन फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के साथ किसानों की आय बढ़ाने में सहायक

जबलपुर। जागत गांव हमार

खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर द्वारा अनुसूचित जाति उप योजना के तहत 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का 22 से 24 अक्टूबर के बीच किया गया। कार्यक्रम का विषय 'फसलों में उन्नत खरपतवार प्रबंधन तकनीकियां' था, जिसमें अनुसूचित जाति के किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों का ज्ञान और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन निदेशालय के निदेशक, डॉ. जेएस मिश्र ने किया। उन्होंने चयनित किसानों को बधाई दी और कहा, उन्नत खरपतवार प्रबंधन तकनीकियां न केवल फसलों की उत्पादकता में सुधार करती हैं, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने में भी सहायक

होती हैं। डॉ. मिश्र ने इसे अनुसूचित जाति उप योजना के अंतर्गत किसानों के सशक्तिकरण की दिशा में एक सकारात्मक पहल बताया।

कार्यक्रम के दौरान प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. पीके सिंह ने प्रतिभागियों को खरपतवार प्रबंधन के वैज्ञानिक और तकनीकी पहलुओं कि जानकारी दी। कार्यक्रम की शुरूआत में नोडल अधिकारी (अनु.जा.उपयो.), डॉ. योगिता घरडे ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा और उद्देश्यों से सबको अवगत कराया। कार्यक्रम में गोसलपुर तथा पाटन क्षेत्र के 9 गांवों के अनुसूचित जाति के 45 किसानों ने हिस्सा लिया।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, **संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)